दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र

श्री महावीरजी

त्रैमासिक पत्रिका

• www.shrimahaveerji.com • online booking: www.mahaveerji.org

वर्ष-2 (अंक: 4) त्रैमासिक | दिसम्बर 2012 से फरवरी 2013 | अहिंसा परमो धर्म: | वीर निर्वाण सम्वत् 2539 | वैश्वीकरण अंक

नमन !

- 'जिनवाणी' का सौरभ है 'अहिंसा'
- वस्तु का स्वभाव ही 'धर्म' है।

अत: संसार का सुसंचालन 'अहिंसा परमो धर्म:' पर ही आधारित है। यह स्वत: सिद्ध है।

वैश्वीकरण (Global) का चक्र एकमात्र 'अहिंसा' की केन्द्रीय धुरी पर ही घूम रहा है।

श्रमण संस्कृति (जैन धर्म) के अन्तिम **24**वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने मानव मात्र को ही नहीं अपितु जीव मात्र को जीने का अधिकार यह कहकर दिया है 'जीओ और जीने दो' (अर्थात् दूसरे के जीने का भी ध्यान रखो)।

पृथ्वीलोक (मृत्युलोक)का यह शाश्वत सन्देश है कि संघर्ष ही जीवन है (Struggle is Life) जो 'अहिंसा धर्म' की प्राणवायु (ऑक्सीजन) से सफलता की उतंग सीढियाँ चढ़ पाता है और अन्त में लक्ष्य को भी प्राप्त हो पाता है।

वस्तुत: संसार की व्यवस्था 'मर्यादा' से ही है। समुद्र मर्यादा में है तो संसार पटल पर अमेरिका, योरोप, जापान, आस्ट्रेलिया, भारत जैसे विशाल पृथ्वीखण्ड दृष्टव्य है। सूर्य मर्यादा पालन करता है तो दिन-रात का नियमित निर्धारण करता आ रहा है क्योंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर निरन्तर घूम रही है। ब्रह्माण्ड गतिमान है, किन्तु मर्यादा में। मर्यादा न होने पर विनाश ही विनाश है। मर्यादा सहित गतिमान रहना मानवीय कर्त्तव्य है। मनुष्य को मर्यादा में रहने के लिए उसमें संयम, संवेदनशीलता, समयानुशासन, दया व विनयशीलता और जरूरतमन्द व्यक्ति के लिए योग-क्षेम की आतुरता एवं समाजसेवा की सक्रियता बनी रहनी चाहिये। विद्या, ज्ञान व विवेक अर्जन के लिए 'श्री महावीरजी' अतिशय क्षेत्र के द्वार खुले हुए हैं।

विश्व में 'श्री महावीरजी' का प्रकाश इतना विस्तीर्ण हुआ है कि परदेश से जिज्ञासु यहाँ आकर अपभ्रंश भाषा अकादमी में प्रवेश लेकर जैन आगम (साहित्य) का ज्ञानार्जन कर रहे हैं तथा प्राकृत-अपभ्रंश भाषा का अध्ययन कर रहे हैं।

भारत में ऋतुराज बसंत (बसंतोत्सव) की प्रतिछाया में श्री महावीरजी-पत्रिका का बसंती रंग से रंगा यह मनभावना पुष्प देश-विदेश को अन्तस: की सुगंध से सरोबार कर पायेगा, ऐसा हमारा आत्मविश्वास है। आत्म-सौरभ सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है।

अन्त में भगवान महावीर के चरणवन्दन के साथ नमन्।

आभार सहित !

धम्पकी नसियां में स्थित कीर्तिस्तम्भ।

सद्भावी
जस्टिस एन. के. जैन
अध्यक्ष

अतिशय क्षेत्र महावीरजी के बढ़ते कदम...

1. दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी का द्वि-वार्षिक प्रतिवेदन (2009-2010 एवं 2010-2011) प्रकाशित करवाया।
2. क्षेत्रपाल जी की छोटी वेदी में चाँदी के कवच, मुकुट, छोटा त्रिशूल, छत्र, श्री पंकज जी जैन, अम्बाला छावनी व भगवान महावीर की वेदी के ऊपर गुम्बज में तीन नग का चाँदी का एक छत्र श्री विनोद जी गुड़गाँव द्वारा पूर्ण कराया गया।

3. न्यायाधिपति माननीय श्री नरेन्द्र कुमार जैन, कार्यवाहक मुख्य न्यायाधिपति, राजस्थान हाईकोर्ट द्वारा 1930 से अब तक के 100 सदस्य ट्रस्टियों की परिचय पुस्तिका का विमोचन सम्पन्न हुआ।
4. श्रीमती चन्द्रावली सिद्धोमल जैन अस्पताल एवं प्रसूति-गृह श्री महावीरजी में विकास एवं जनस्वास्थ्य सुविधा के लिए एक्स-रे व ई.सी.जी. मशीन रिपेयर कराई गई व दो नई मशीने (1) ऑटो एनालाईजर क्रय की गई। (2) हैंड प्रेस बेबी वार्मर मशीन की कार्यवाही चालू है।

5. दिनांक 25 नवम्बर, 2012 को विशाल पोलियों जाँच, चयन, विकलांगों के हितार्थ उपकरण वितरण शिविर नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

6. न्यायाधिपति माननीय श्री नरेन्द्र कुमार जैन, कार्यवाहक मुख्य न्यायाधिपति, राजस्थान हाईकोर्ट द्वारा तृतीय त्रैमासिक पत्रिका 'कार्य निष्पादन अंक' का विमोचन 27 दिसम्बर 2012 को किया गया।

7. दिनांक 9 दिसम्बर, 2012 को दिगम्बर जैन नसियां भट्टारकजी, जयपुर में मैट्रो मास हार्ट केयर एण्ड मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, जयपुर के सहयोग से हृदय, गुर्दा रोग एवं डायलिसिस, स्त्री रोग, दंतरोग, ब्लड प्रेसर, ब्लड शुगर एवं ई.सी.जी. जांच हेतु विशाल नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर लगाया गया।

श्रीमती [illegible] देवी, सरपंच, श्री महावीरजी, मैट्रो मास हार्ट केयर एण्ड मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल के कॉन्सर्स कैम्प का उद्घाटन करते हुए।

8. दिनांक 13 जनवरी, 2013 को महावीरजी में मैट्रो मास हार्ट केयर एण्ड मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, जयपुर के सहयोग से हृदय, हड्डी एवं जोड़ प्रत्यारोपण रोग, श्वांस व अस्थमा रोग, शिशु रोग-ब्लड प्रेसर, ब्लड शुगर एवं ई.सी.जी. जाँच शिविर सम्पन्न हुआ।

9. माह फरवरी 2013 में अन्नपूर्णा भोजनालय, श्री महावीरजी में सोलर स्टीम कुकिंग सिस्टम व डी.जी. सेट स्थापित किया गया।

10. क्षेत्र द्वारा संचालित दिगम्बर जैन मंदिर, जमवारामगढ़ में पुजारी/व्यवस्थापक के आवास का निर्माण।

11. अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की सभी धर्मशालाओं के आरक्षण की स्थिति की जानकारी के लिए एल.ई.डी. लगवाने की कार्यवाही प्रोसेस में है।

12. दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित जैन विद्या संस्थान के लिए अपभ्रंश साहित्य अकादमी-पुस्तकालय बनाने हेतु राज्य सरकार से प्राप्त जमीन की रजिस्ट्री करा ली गई है। अन्य कार्य प्रगति पर है।

13. श्री महावीरजी में 48 कमरों की धर्मशाला का निर्माण कार्य प्रगति पर।

14. बतौर प्रबन्धक, दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्रप्रभु जी आमेर के सम्पूर्ण जीर्णोद्धार के लिए विस्तृत प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करवाई गई है।

15. श्री महावीरजी में हेलीपेड बनवाने के लिए प्रोसेस शुरू।

16. दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित जैन विद्या संस्थान/अपभ्रंश साहित्य अकादमी में फ्रेंकिंग सिस्टम क्रय किया गया।

17. **नूतन जैन साहित्य प्रकाशन श्रृंखला :**

- जैन विद्या संस्थान के प्रकाशन।

  (i) आमेर के दिगम्बर जैन मन्दिर नेमिनाथजी (सांवलाजी) की प्रतिमाऐं।

  (ii) जैन-विद्या पत्रिका का 'शिवार्य विशेषांक'

- अपभ्रंश साहित्य अकादमी के प्रकाशन :

  (i) अपभ्रंश-हिन्दी-व्याकरण

  (ii) प्राकृत-हिन्दी-व्याकरण भाग-1

  (iii) प्राकृत-हिन्दी-व्याकरण भाग-2

18. अपभ्रंश साहित्य एकेडमी में विदेशी स्कालर्स (Yale Univeristy Ghent University, Belgium & others) द्वारा जैन आगम साहित्य, प्राकृत व अपभ्रंश का ज्ञानार्जन एवं रिसर्च कार्य।

19. **महावीरजी क्षेत्र बतौर प्रबन्धकर्ता –**

दिगम्बर जैन मंदिर श्री नेमिनाथ जी (सांवलाजी) आमेर ट्रस्ट में विकास कार्यों का विवरण :–

(i) राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज के सान्निध्य एवं शतायु पुरुष श्रद्धेय श्री तेजकरण जी डंडिया व सदस्यों की उपस्थिति में दिगम्बर जैन नसियां भट्टारकजी के विकास कार्यों में आर्थिक सहयोग के लिए धर्मश्रेष्ठी दातारों सर्व श्री रतनलाल जी काला, श्रेयांसकुमार जी गोधा, सुधीरकुमार जी कासलीवाल, गिरिजकुमार जी पंसारी, पदमचन्द जी तोतूका, श्रीमती ऋतु जी कासलीवाल, श्रीमती ऊषा जी पापड़ीवाल, नरेश कुमार जी पापड़ीवाल व दयानिधि जी, पयोनिधि जी कासलीवाल को सम्मानित किया गया।

दिगम्बर जैन नसियां, भट्टारकजी में –

(i) निज मंदिर के मुख्य द्वार पर पीतल की किवाड़ जोड़ी श्री रतनलाल जी काला, मूलवेदी के सामने वाली किवाड़ जोड़ी श्री श्रेयांसकुमार जी गोधा, मंदिर जी की अन्य चार किवाड़ जोड़ी श्री सुधीरकुमार जी कासलीवाल के सहयोग से लगाई गई।

(ii) श्री हरिशचन्द्र तोतूका सभागार को वातानूकुलित करवाने हेतु श्री पदमचन्द जी व श्री अनिल जी तोतूका द्वारा स्वीकृति।

(iii) परिसर में स्थित निज मंदिर के पूर्व की तरफ स्थित भट्टारकों की छतरियों का जीर्णोद्धार करवाया गया।

(iv) मंदिर में मूलवेदी के चारों एवं गुम्बज पर कराये गये सोने व चौक में कंगूरों का कार्य श्री गिरिजकुमार जी पंसारी के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

(v) नसियां भट्टारकजी में 'श्रीमती ललितादेवी रामचन्द्र कासलीवाल' के नाम से अतिथि गृह का निर्माण कार्य प्रगति पर।

(vi) जैन भवन के चौक पर श्रीमती ऊषा जी पापड़ीवाल के सहयोग से डोम लगवाया गया।

Comments and messages

on e-mail received about 1035 are in number. Some of them are...

(i) Ellen Gough

It was a pleasure meeting you the other day at the Apabramsa Sahitya Academy in Jaipur.... In the past decade, the number of students outside of India working on Jainism has increased dramatically. Today there are dozens of post-graduate students working on Jainism outside of India, Many of whom come to the Apabramsa Sahitya Academy to learn Prakrit or Aparbramsa or to obtain manuscripts. It has been a great resource for foreign students and scholars.

(ii) TilloDetige, USA

Came to Jaipur in February 2013 to make use of the wonderful facilities at Jain Vidya Sansthan / ApabramsaSahitya Academy to do research for his doctoral dissertation on the Bhattarakasampraday in North-India from the 13^{h} to the 17^{h} century. He belongs to the Indology department of Ghent University at Ghent, Belgium, Europe. Ghent University has a long tradition of Jaina studies with currently several scholars researching on Jainism: Prof. Dr. Eva De Clercq (Apabramsa,Jain Purana's), Prof. Dr. Frank Van Den Bossche (Prakrit, Jain philosophy), Dr. Marie-Hélène Gorisse (Jainalogic), Dra. Claire Maes (early Jainism). Since a few years, Belgium also boasts a wonderful Jain mandir in the city of Antwerp, which is unique to Europe. Research on Jainism then again is quite well spread throughout Europe, with scholars actively researching and teaching in London, Sussex

and Edinburgh (UK), Paris (France), Marburg (Germany), Warshaw (Poland), etc.

With sincere thanks for the welcome and superb facilities at the Bhattarakiya Nasiya!

(iii) Dr. Gautam Jain, Zambia.

Feel very great and happy to see lord. This place is developing like anything due to online facility.

(iv) Dr. Komal-Rishi Jain, America

Mahaveerji journey has become very peaceful after online system.

(v) Neeraj Mittal, Delhi

"Online booking system has proved how sincere and dedicated is management committee. May all sincere regards to all members"

(vi) Salil Jain, Bhind

"To know that online booking for rooms are available, feel proud and a good decision"

(vii) Rakhee Jain, Bangkok

To start online is very good decision, we appreciate the committee, easy for us to make our plan in advance.

(viii) Tushar Jain, London

Earlier we are facing problems to visit mahaveerji after reaching India but now system helped us to visit the holy shrine.

(ix) Muskan Jain, Meerut

"Mahaveerji is a place of devotions it's a great pleasure for Jain community that this website has been started it is such a website for jains."

(x) Dr. Vijay Kumari Mediratta, Ghaziabad

For peace & prayer clubbed with facilities provided by the management is commendable. Day by day management is adopting modern technology to reach people from all walks of life. When ever we visit we make a commitment to visit again. We get real peace here in the lap of Mahaveerji. Thanks for the meticulous planning by the management.

(xi) Ashish Jain, New Delhi

Spending time at Shri Mahaveerji with such an arrangements of rooms and service is real excellent experience. Will look forward to visit frequently as every arrangement is so organized and decent.

(xii) Priyanka Jain, Baraut

Shri Mahaveer Ji is a place of peace & Devotion. It is great to organize the online booking system.

(xiii) Punit Jain, Krishna Nagar, Delhi

Mahaveerji is the heart of all the jains. Its great success for online booking to thanks management.

(xiv) Naveen Jain, Mandi Gobindgarh (Punjab)

I Can't express my pleasure to see this wonderful, attractive and beneficial website. Thanks to great managing committee.

(xv) Narendra Kumar Jain, Mauritius

Shree Mahaveer ji ke darshan kiye . This online service made my trip very easier . Lift facility is giving benefits for elderly and handicapped people.

Food quality is excellent . Visit to this holy place was very good. Best wishes to the Committee members .

अग्रसेन कन्या महाविद्यालय, हिण्डौन सिटी की 295 छात्राओं ने भगवान महावीर स्वामी के दर्शन किए।

परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज ससंघ आमेर के दिगम्बर जैन मंदिर नेमिनाथजी (सांवलाजी) में ससंघ विराजमान

नोट: ट्रस्टीगण परिचय पुस्तिका व सभी त्रैमासिक पत्रिका अंक वेबसाईट www.mahaveerji.org पर उपलब्ध है।

मैनेजर कार्यालय :
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
श्री महावीरजी (जिला करौली) राजस्थान -322220
दूरभाष : 07469-224323, 224339
www. shrimahaveerji.com
Online Room Booking : www.mahaveerji.org
e-mail: mahaveerjitrust@gmail.com

मंत्री कार्यालय :
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
कुन्दकुन्द भवन परिसर, दिगम्बर जैन नसियाँ, भट्टारकजी
सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-302004
दूरभाष : 0141-2385783, 2385784

सम्पादक मण्डल : न्यायमूर्ति एन.के. जैन, महेन्द्र कुमार पाटनी, डॉ. कमलचन्द सोगाणी, एम.एल. थॉकस्या के लिए राजू ग्राफिक आर्ट, अजमेरी गेट, जयपुर में मुद्रित।
प्रकाशक : प्रबन्धकारिणी कमेटी, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर (राजस्थान)